Downloaded from www.studiestoday.com

अध्याय-8

क्षेत्रीय आकांक्षाएं

भारतीय राजनीति में

- 1980 के दशक को स्वायत्तता की मांग के दशक के रूप में भी देखा जा सकता है। इस दौर में देश के कई हिस्सों से स्वायतत्ता की मांग उठी।

- इस दशक में असम, पंजाब, मिजोरम और जम्मू कश्मीर में क्षेत्रीय आकांक्षाओं ने सर उठाया और सरकार को बड़े जतन से समझौते करने पडे।

- अलगवादी आंदोलनों के साथ अतिरिक्त देश में भाषा के आधार पर राज्यों के गठन की मांग को लेकर आंदोलन चले। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात और पंजाब ऐसे ही आंदोलनो वाले राज्य है।

- आजादी के तुरंत बाद जम्मू-कश्मीर का मसला सामने आया। यह सिर्फ भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष का मामला नही था। कश्मीर घाटी के लोगों की राजनीतिक आकांक्षाओं का सवाल भी इससे जुड़ा हुआ था।

- जम्मू एवं कश्मीर में तीन राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र-जम्मू कश्मीर लद्दाख है।

- 1947 से पहले जम्मू एवं कश्मीर में राजशाही थी।

- अक्टूबर 1947 में पाकिस्तान द्वारा कबायलीयों के भेष में आक्रमण के बाद कश्मीर के महाराजा हरिसिंह ने अपनी रियासत के भारत में विलय को सहमति दे दी।

- भारतीय संविधान में अनुच्छेद 370 के द्वारा जम्मू-कश्मीर के लिए विशेष प्रावधान किए गए।

- 1989 से जम्मू कश्मीर में अलगाववादी राजनीति ने सर उठाया। अलगाववादियों का एक तबका कश्मीर को अलग राष्ट्र बनाना चाहता है। कुछ अलगाववादी समूह चाहते है कि कश्मीर का विलय पाकिस्तान में हो जाए। कुछ लोग चाहते हैं कि कश्मीर भारत संघ का ही हिस्सा रहें लेकिन और स्वायत्तता दी जाए।

- 1970 के दशक में पंजाब में अकालियों के एक तबके ने स्वायत्तता की मांग उठायी। 1973 मे

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

आनंदपुर साहिब हुआ।

– पंजाब के कुछ चरमपंथी तत्वों ने भारत से अलग होकर 'खालिस्तान बनाने की वकालत की। आंदोलन ने सशस्त्र विद्रोह का रूप ले लिया। भारत सरकार ने इसे कुचलने के लिए 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार चलाया। उस ऑपरेशन की प्रतिक्रिया प्रधानमंत्री इंदिरागांधी की हत्या के आरोप रूप में सामने आयी। इसके बाद दिल्ली सहित उत्तर भारत के कई हिस्सों में सिख समुदाय के विरूद्ध हिंसा भड़क उठी।

– 1985 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी और अकाली दल के अध्यक्ष हरचंद सिंह लोगोबाल के बीच एक समझौता हुआ जिसे पंजाब समझौता भी कहा जाता है।

– भारत के पूर्वोत्तर के सात राज्यों को सात बहने भी कहा जाता है।

– पूर्वोत्तर का भौगोलिक रूप से अलग–थलग होना, जटिल सामाजिक संरचना, आर्थिक पिछड़ापन और लंबी अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा इस क्षेत्र को संवेदनशील बनाती है।

– पूर्वोत्तर के राज्यों में राजनीति पर तीन मुद्दे हावी रहे हैं :– स्वायत्तता की मांग, अलगाव के आंदोलन और बाहरी लोगों का विरोध।

एक अंकीय प्रश्न

1. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 370 किस राज्य से संबंधित है?
2. अकाली दल किस राज्य से संबंधित राजनीतिक दल है?
3. भाषा के आधार पर गठित किसी एक राज्य का नाम लिखिए?
4. हिंदी विरोधी आंदोलन भारत के किन राज्यों में चला?
5. किन राज्यों की राजनीति में बाहरी लोगों का मुद्दा निरंतर हावी रहा है?
6. पेरियार के नाम से कौन प्रसिद्ध है?
7. डी. एम. के. की स्थापना किसने की?
8. गोवा पुर्तगाल से स्वतंत्र कब हुआ?
9. सिक्किम भारत का राज्य कब बना?
10. सात बहनों के नाम से किन्हें जाना जाता है?
11. आसू का शब्द विस्तार लिखिए?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

दो अंकीय प्रश्न

1. किन्हीं दो राज्यों के नाम लिखिए जहां अलगाववादी आंदोलन चले?
2. जम्मू-कश्मीर में कौन -कौन से राजनैतिक एवं सामाजिक क्षेत्र सम्मिलित है?
3. पंजाब से निकले दो राज्यों के नाम लिखिए?
4. पंजाब समझौता कब और किनके बीच हुआ था?
5. 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' कब और किस राज्य में चलाया गया?
6. सात बहनों के नाम से प्रसिद्ध राज्यों में किन्हीं चार के नाम लिखिए?
7. उन चार देशों के नाम लिखिए जिनकी सीमाएं भारत के पूर्वोत्तर राज्यों से लगी हुई है?
8. भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र की राजनीति में कौन से मुख्य मुद्दे रहे है?
9. भारत सरकार द्वारा जनता की इच्छा जानने के लिए जनमत संग्रह कहां और किस संदर्भ में कराया गया?
10. क्षेत्रीय असंतुलन के आधार पर बने किन्ही दो राज्यों के नाम लिखिए?
11. किन्ही दो क्षेत्रों के नाम लिखिए जिन्हें राज्य बनाये जाने की मांग की जा रही है?

चार अंकीय प्रश्न

1. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव क्यों विवादास्पद रहा?
2. पंजाब समझौते के प्रमुख प्रावधान लिखिए?
3. सिक्किम के भारत में विलय पर प्रकाश डालिये?
4. भारत में पूर्वोत्तर का इलाका ज्यादा संवेदनशीन क्यों समझा जाता है?
5. द्रविड़ आंदोलन पर टिप्पणी कीजिए?
6. हर क्षेत्रीय आंदोलन अलगाववाद की और नही जाता। स्पष्ट कीजिए।
7. मिलान कीजिए -

(अ) नेशनल	(1) पंजाब
(ब) पेरियर	(2) मिजोरम
(स) आनंदपुर साहिब प्रस्ताव	(3) जम्मू-कश्मीर
(द) लालड़ेगा	(4) तमिलनाडु

8. भारत में क्षेत्रीय असंतोष को नियंत्रित करने के दो उपाय लिखिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

9. निम्न राज्यों और उनके निर्माण वर्ष का मिलान कीजिए :-

(1) नागालैंड	(i) सन् 1972
(2) अरूणाचल प्रदेश, मिजोरम	(ii) सन् 1960
(3) मेघालय, मणिपुर, त्रिपुरा	(iii) सन् 1961
(4) हरियाणा	(iv) सन् 1987

छः अंकीय प्रश्न

1. कश्मीर समस्या के विभिन्न पहलुओं की चर्चा कीजिए?
2. पंजाब समस्या क्या थी? यह देश की अखंडता से संबंधित अन्य समस्याओं से किस प्रकार भिन्न थी?
3. असम आंदोलन सांस्कृतिक अभिमान और आर्थिक पिछड़ेपन की मिली-जुली अभिव्यक्ति था। व्याख्या कीजिए।
4. भारतीय लोकतंत्र में निरंतर सिर उठाती क्षेत्रीय आकांक्षाओं से हम क्या निष्कर्ष निकाल सकते है?
5. नीचे लिखे अवतरण को पढ़े और इसके आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दे :-

क्षेत्रीय आकांक्षाओं को दबाने की जगह उनके साथ लोकतांत्रिक बातचीत का तरीका अपनाना सबसे अच्छा होता है। जरा अस्सी के दशक की तरफ नजर दौड़ाए-पंजाब में उग्रवाद का जोर था, पूर्वोत्तर में समस्याएं बनी हुई थी, असम के छात्र आंदोलन कर रहे थे और कश्मीर घाटी में माहौल अशांत था। इन मसलों को सरकार ने कानून-व्यवस्था की गड़बड़ी का साधारण मामला मानकर पूरी गंभीरता दिखाई। बातचीत के जरिए सरकार ने क्षेत्रीय आंदोलनों के साथ समझौता किया। इससे सौहार्द का माहौल बना और कई क्षेत्रों में तनाव कम हुआ।

(1) क्षेत्रीय आकांक्षाओं के विषय में बातचीत का रास्ता क्यों अच्छा है?
(2) अस्सी के दशक में पूर्वोत्तर में समस्या के क्या कारण थे?
(3) क्षेत्रीय आन्दोलनों के साथ समझौतो के दो उदाहरण दीजिए?

एक अंकीय प्रश्नो के उत्तर

1. जम्मू-कश्मीर, 2. पंजाब, 3. पंजाब, 4. दक्षिणी राज्यों में, 5. पूर्वोत्तर के राज्यों में
6. ई. वी. रामास्वामी नायकर 7. सी. अन्नादुरै 8. सन् 1961 में 9. 1975 में 22 वाँ राज्य बना
10. पूर्वोत्तर के राज्यों को 11. आल असम स्टूडेंट्स यूनियन।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

दो अंकीय प्रश्नों के उत्तर :-

1. पंजाब, मिजोरम आदि।
2. जम्मू, कश्मीर और लद्दाख।
3. हरियाणा, हिमाचल प्रदेश
4. जुलाई 1985 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी और अकाली दल के अध्यक्ष हरचंद सिंह लोगोवाल के बीच।
5. जून 1984 में पंजाब में
6. मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैण्ड आदि
7. म्यांमार, चीन (तिब्बत), बांग्लादेश, भूटान
8. - स्वायत्तता की मांग
   - अलगाववाद
   - बाहरी लोगो का विरोध
9. जनवरी 1967 में गोवा में कराया गया। यह गोवा को महाराष्ट्र राज्य से मिलाने के बारे में था।
10. छत्तीसगढ़, उत्तराखंड आदि
11. तेलगांना, हरित प्रदेश आदि।

चार अंकीय प्रश्नों के उत्तर :-

1. क्षेत्रीय स्वायत्तता की मांग, स्वायत्त सिख राष्ट्र की मांग और सिक्खों के प्रभुत्व के ऐलान के कारण
2. - चंडीगढ़ पंजाब को दिया जाएगा
   - पंजाब-हरियाण सीमा विवाद के लिए एक आयोग नियुक्त होगा
   - पंजाब में उग्रवाद प्रभावित लोगों को मुआवजा
   - पंजाब से विशेष सुरक्षा बल अधिनियम वापस लेना, आदि।
3. टिप्पणी
4. - मुख्य भूमि से भौगोलिक पृथकता, जटिल सामाजिक संरचना, बड़ी अंतर्राष्ट्रीय संरचना, बड़ी अंतर्राष्ट्रीय सीमा, आर्थिक पिछड़ापन, सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण आदि के कारण
5. टिप्पणी
6. क्षेत्रीय आधार पर राजनीतिक, आर्थिक एवं विकास सम्बन्धी मांगे उठना स्वाभाविक है। लेकिन इन मांगो का परिणाम देश से अलगाव नहीं होता। अलगाववादी मांगे तो कुछ चरम परिस्थितियों में ही उठती है।

7 अ. (iii)

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

ब. (iv)
स. (i)
द (ii)

8. अ. (ii)
ब. (iv)
स. (i)
द (iii)

छः अंकीय प्रश्नों के उत्तर

1. – महाराजा हरिसिंह द्वारा स्वतंत्र रहने की इच्छा
– पकिस्तान द्वारा कबाइलियों के रूप में आक्रमण
– भारत में विलय, अनुच्छेद 370 द्वारा विशेष स्थिति
– आजाद कश्मीर और अक्साई चीन का मसला
– पाकिस्तान द्वारा आंतकवाद को बढावा
– नेशलन कांफ्रेस तथा पी. डी. पी. के दृष्टिकोण आदि

2. – 1970 के दशक में अकालियों के एक तबके द्वारा पंजाब के लिए स्वायतता की मांग उठाना जिसने आगे चलकर खालिस्तान का रूप ले लिया और सशस्त्र विद्रोह जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो गयी।
– आनंदपुर साहिब प्रस्ताव, ऑपरेशन ब्लू स्टार
– पंजाब समझौता
– पंजाब समस्या किसी पिछड़ेपने के कारण नहीं थी बल्कि यह देश के समृद्ध प्रांत में उत्पन्न हुई थी जो उपेक्षित भी नहीं था इस प्रकार यह समस्या अन्य समस्याओं से भिन्न थी।

3. मुख्य भूमि से भौगोलिक अलगांव व पृथक सांस्कृतिक पहचान का अहसास
– आर्थिक पिछड़ापन
– बाहरी लोगों (अवैध अप्रवासी–बांग्लादेशियों, बंगाली और अन्य) की बढ़ती संख्या से स्थानीय लोगो में विभिन्न आंशकाएं पैदा हो गयी जैसे – संस्कृति को खतरा, राजनीतिक महत्व घटना, बेरोजगारी बढ़ना, व्यापार व व्यवसाय के अवसर घटना इत्यादि।

4. – क्षेत्रीय आकांक्षाए लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग है।
– क्षेत्रीय समस्याओं को जोर जबरदस्ती की बजाय बातचीत से सुलझाना चाहिए।
– विभिन्न क्षेत्रों की सत्ता में साझेदारी जरूरी है।
– क्षेत्रीय असंतुलन देश की एकता के लिए एक खतरा है।
– विभिन्नताओं का सम्मान किया जाना चाहिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(5) (1) क्योंकि क्षेत्रीय आकांक्षाओं के प्रति दमन की नीति से तनाव बढ़ता है और मामला बिगड़ता है।

(2) स्वायतता की मांग

- अलगाववाद
- बाहरी लोगों का विरोध

(3) - पंजाब समझौता

- 1968 में राजीव गांधी और लालडेंगा के बीच समझौता आदि।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com